Received: Jul '25
Revised:
Accepted: Aug '25

© 2025 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

"संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व गुणों के प्रभाव का अध्ययन"

शोध निर्देषक :
डॉ. अनिल कुमार
(प्रोफेसर)
शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

शोधकर्ता :
प्रदीप
शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

ABSTRACT

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व गुणों के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। दत्त संकलन हेतु उपकरण के रूप में डॉ. कुसुम अग्रवाल द्वारा निर्मित अग्रवाल अभिभावक प्रोत्साहन मापनी का प्रयोग किया गया है और व्यक्तित्व के प्रभाव के मापन के लिये डॉ. सी. प्रकाश शर्मा द्वारा निर्मित व्यक्तित्व समायोजन प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है तथा निष्कर्ष इस प्रकार प्राप्त हुआ कि संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व गुणों के प्रभाव में सार्थक अंतर पाया गया।

Keywords:- शैक्षिक उपलब्धि, अभिभावक प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व गुण।

प्रस्तावना :–

षिक्षा प्रकाष का वह स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्षन करती है। शिक्षा के प्रकार से ही हमारी कठिनाइयों का निवारण होता है। सूक्ष्म अध्ययन से यह ज्ञान होना है कि शिक्षाआजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जन्म से पूर्व भी प्रकृति गर्भ के बालक को संसार में जीने लायक बनाती है। तत्पष्चात् उसे गुरू के रूप में माता पिता एंव परिवार के वयोवृद्ध सदस्य तथा शिक्षक उसे विषिष्ट शिक्षा प्रदान करते है।

बालक की षिक्षा में परिवार का महत्व :– वर्तमान युग में संयुक्त परिवार का स्थान एकांकी परिवार ने ले लिया है तथा इसके अनेक कार्यो को भी दूसरी सामाजिक संस्थाओं ने संभाल लिया है पर इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि आधुनिक परिवार पर बालक के पालन पोषण तथा षिक्षा का उत्तरदायित्व नहीं रहा है। नवजात षिषु अपने जीवन की यात्रा को परिवार से ही आरम्भ करता है तथा इसी संस्था में रहते हुए विभिन्न प्रकार की षिक्षा प्राप्त होती है। बालक के विकास पर उसके परिवार का बहुत प्रभाव पड़ता है।

परिवार एक छोटी सी सामाजिक संस्था है, जिसमें रहते हुए बालक माता पिता के अतिरिक्त भाई बहनो तथा अन्य संबंधियों के संपर्क में आता है। इस सभी का अपना अलग–अलग कार्य होता है सभी सदस्य एक दूसरे पर अपना प्रभाव डालते है, इस प्रभाव से वह समाज के तौर तरीके सीखता है तथा अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

शोध अध्ययन का महत्व :–

अभिभावक प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व गुण बच्चों को अभिभावकों द्वारा दिया जाने वाला एक उपचार है जिससे बालक अभिभावकों के मार्गदर्षन एवं पुष्टीकरण व देखभाल के द्वारा अपने अच्छे व्यवहार की संभावनाओं को बढ़ाता है। अभिभावक प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व गुण बालकों के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करता है। अभिभावक अपने प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व गुणों के द्वारा बच्चों की समस्याओं का समाधान कर सकेंगें। अभिभावक प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व गुण देकर तनाव के क्षणों में बच्चों के हतोत्साहित होने की प्रवृत्ति अंकुष लगाने में सफल हो पाएगें। अभिभावक प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व गुण की आवष्यकता व महत्व को अध्यापक तथा स्वयं बच्चे समझ पाएगें। अभिभावक अपने प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व गुण का मूल्यांकन बच्चों की उपलब्धि के द्वारा कर पाएगें। अभिभावक अपने प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व गुणों के द्वारा बच्चों को एक सफल व्यक्ति व अच्छा नागरिक बना पाएगें।

समस्या कथन :–

"संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व गुणों के प्रभाव का अध्ययन"

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध प्रबंध में अध्ययन हेतु शोध विधि के रूप में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देष्य :–

1. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों के उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों के उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व गुणों के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव में सार्थक अतंर नहीं पाया जाता है।

2. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व गुणों के प्रभाव में सार्थक अतंर नहीं पाया जाता है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्ष के रूप में कुल 800 विद्यार्थी जिसमें संयुक्त परिवार व एकल परिवार के 400–400 कुल 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

सांख्यिकी विधियाँ :–

मध्यमान, प्रमाप विचलन व टी–मान का प्रयोग सांख्यिकी विधियों के रूप में किया गया है।

शोध उपकरण :–

प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधकर्ता द्वारा अभिभावक प्रोत्साहन के मापन के लिये डॉ. कुसुम अग्रवाल द्वारा निर्मित अग्रवाल अभिभावक प्रोत्साहन मापनी का प्रयोग किया गया है और व्यक्तित्व के प्रभाव के मापन के लिये डॉ. सी. प्रकाश शर्मा द्वारा निर्मित व्यक्तित्व समायोजन प्रष्नावली का प्रयोग किया किया गया है।

निष्कर्ष :–

1. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव में सार्थक अंतर पाया गया। संयुक्त और एकल परिवार के विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक प्रोत्साहन के प्रभाव में सार्थक अंतर पाया गया। संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकल परिवार के अभिभावक का प्रोत्साहन ज्यादा दिखाई दिया।
2. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व गुणों के प्रभाव में सार्थक अंतर पाया गया। संयुक्त और एकल परिवार के विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व गुणों के प्रभाव में सार्थक अंतर पाया गया। एकल परिवार के विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व गुणों का प्रभाव संयुक्त परिवार की अपेक्षा ज्यादा दिखाई दिया।

शैक्षिक निहितार्थ :–

वर्तमान समय में शिक्षा का प्रमुख कार्य विद्यार्थियों का सर्वागीण विकास करना होता है। शिक्षा ही वह साधन है, जिसके द्वारा न केवल विद्यार्थियों बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति का सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षा मानव जाति के हजारों वर्षो से संचति ज्ञान मूल्यों नैतिक विष्वासों व परम्पराओं का संरक्षण एवं परिवर्धन करके उसे नई पीढ़ी को हस्तांरित करती है। शिक्षा ही किसी व्यक्ति समाज और राष्ट्र को विकास एवं एवं परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. भार्गव, महेष एवं भार्गव, वीनू (2014) – मानव विकास मनोविज्ञान एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, चतुर्थ संस्करण, 190, 191, 198
2. मृत्यु मनिकम आर. अन्नामलाई वि.वि. (1992) – परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति का बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन Journal of education & psychological research volume 7(2). 131-13
3. सिंह, रामपाल (2005) – अधिगम का मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण, 73
4. राव, नलिनी (1985) – रॉस सामाजिक परिपक्वता मापनी, मैनुअल, नेषनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेषन 1–23
5. राय, पारसनाथ (2008) – अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, द्वादशम संस्करण, 108, 109, 302, 306